IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीकृष्ण भक्ति {वल्लभ सम्प्रदाय} का विश्लेषण {1787 ई. से 1851 ई.}

डॉ. शिव कुमार व्यास, पीएच.डी.[1]

[1] लेखक वर्तमान में डी–184, 'श्री द्वारकाधीश', मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर में निवास करते हैं तथा राजकीय सेवा में वरिष्ठ अध्यापक के पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे है।

सारांश :

भारत प्राचीन काल से ही धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र रहा है। देश के पश्चिमी भाग में स्थित बीकानेर राज्य में स्थापना से पूर्व ही विष्णु के अवतार स्वरूप ; श्री कृष्ण के प्रति आस्था एवं अनन्य भक्ति के अवशेष रंगमहल की खुदाई में प्राप्त श्रीकृष्ण के टेराकोटा के फलकों से प्राप्त होते हैं। यही आस्था कालान्तर में बीकानेर में प्रमुखता के साथ उभरती हुई प्रतीत होती है जब यहाँ विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के साथ वैष्णव सम्प्रदायों का विकास हुआ। इन वैष्णव सम्प्रदायों में प्रमुख रूप से वल्लभ सम्प्रदाय का आगमन राज्य स्थापना के प्रथम सौ वर्षों में ही प्रविष्ट हो कर लोकाश्रय एवं राज्याश्रय में व्याप्ती को प्राप्त हो गया। इस सम्प्रदाय की सेवा प्रणालीका को समर्पित बीकानेर में अनेक मन्दिर वल्लभ सम्प्रदाय की अक्षय कीर्ति की पताका को फहरा रहे हैं।

विशिष्ट शब्द :

निकुंज नायक, गोपीजन वल्लभ, शुद्धाद्वैत, जांगलूं, टेराकोटा, मोरछल, छाता, पताका, कुंज

विषय प्रवेश :

मध्यकालीन भारतीय जन मानस में धार्मिक आस्थाओं का ज्वार विभिन्न शैव, शाक्त, वैष्णव आदि सम्प्रदायों के माध्यम से उमड़ रहा था। इस राष्ट्रव्यापी धार्मिक और दार्शनिक तत्वों के निर्वचन एवं संचार से बीकानेर राज्य भी अछूता नहीं रहा। राज्य का शासक वर्ग यद्यपि शाक्त परम्परा के प्रति अधिक आस्थावान था परन्तु काल प्रवाह ने शासकों को वैष्णव सम्प्रदायों की ओर भी आकृष्ट किया और इसी बदलते दृष्टिकोण में विभिन्न सम्प्रदायों के मध्य पुष्ट सेवा प्रणालीका से सेवित वल्लभ सम्प्रदाय या पुष्टि मार्ग ने अपनी उपस्थिति को प्रभावी रूप से पंजीकृत किया और राज्य में अपनी जड़ों को गहराई से स्थापित भी किया।

वल्लभ सम्प्रदाय की पुष्टि भक्ति में निकुंज नायक, गोपीजन वल्लभ भगवान श्रीकृष्ण[1] के विभिन्न पुष्टि सेव्य स्वरूपों[2] के रूप में निर्धारित सेवा प्रणालिका से विधिवत सेवा की जाती है। बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत को, वल्लभ सम्प्रदाय की इस अलौकिक एवं अद्भुत सौंदर्य युक्त छटा ने भी शोभायमान किया है।

बीकानेर राज्य का उदय :

सं 1515 {1459 ई.} में जब मारवाड़ के शासक राव जोधा ने अपने राज्य की राजधानी को मण्डोर से नवीन नगर जोधपुर स्थानान्तरित किया उस समय उसका षष्ठम पुत्र बीका अपने चाचा कांधल के संरक्षण में था। उन्हीं दिनों बीका

[1] लेखक वर्तमान में डी–184, 'श्री द्वारकाधीश', मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर में निवास करते हैं तथा राजकीय सेवा में वरिष्ठ अध्यापक के पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे है। मो. 9460615915, ई. मेल– shivadheesh@gmail.com

अपने चाचा के साथ पाँच सौ सैनिकों व सौ धुड़सवारों व अपने विश्वस्त सिपहसालारों[3] को साथ ले कर राठौड़ राज्य की सीमाओं को मरुस्थलीय भू भूभाग की ओर बढ़ाने के लिए आया।

सर्वप्रथम उसने जांगलूं के साँखलाओं के भू भाग पर कब्जा किया। पूगल की भाटी राजकुमारी से विवाह कर भाटियों से मित्रता स्थापित कर उन्हें अपने पक्ष कर लिया। इस प्रकार इस मरु भूमि के कोडम देसर नामक गाँव में उसने अपना ठिकाना बना कर विजित भू भाग पर शासन करने लगा। थोड़े ही समय में वह दो हजार छः सौ सत्तर गाँवों पर अधिकार कर 'राव' की गौरवपूर्ण पदवी को धारण किया।

राव बीका ने मण्डोर छोड़ने के तीस वर्ष पश्चात् सं. 1545 {1489 ई.} में जाटों के अधिकार के भू भाग पर दो शासकों ; प्रथम राठौड़ शासक 'बीका' एवं द्वितीय जाट शासक 'नेरा' के नाम से नये राज्य एवं राजधानी नगर की राती घाटी के पास स्थापना की।[4] राव बीका से अन्तिम शासक शादुल सिंह तक **कुल इक्कीस** शासकों ने बीकानेर प्रशासन का सफल संचालन किया। (परिशिष्ट – 01)

बीकानेर में कृष्ण भक्ति का प्रारम्भ :

बीकानेर के उत्तर–पूर्व की ओर सूरतगढ़ के पास रंगमहल की खुदाई में श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति के टेराकोटा के रोमन शैली में निर्मित पुरातन फलका प्राप्त होते हैं। इनमें अदभुद् मूंछधारी गोवर्धनधार श्रीकृष्ण, भगवान श्रीकृष्ण की दान लीला[5], एक अन्य फलक में छवि के आधार में केवल पैरों के विन्यास ही प्राप्त हुए है। रंगमहल से सुडौल पुरुष आकृति में सिर के पीछे वलयाकार चक्र अंकित फलक भी प्राप्त हुआ है। इसे श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र का पुरुषोत्तम स्वरूप माना जाता है। इस प्रकार बीकानेर राज्य में श्रीकृष्ण की भक्ति भाव परम्परा का विकास निश्चय ही अत्यधिक प्रारम्भिक काल से हो रहा है। भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ के फलक का अंकन इस क्षेत्र में वैष्णव भक्ति परम्परा को चिह्नित किया है।[6] अतः बीकानेर राज्य की बसावट से पूर्व ही इस सम्पूर्ण क्षेत्र में वैष्णव प्रतीकों की प्राप्ति इस वैभवशाली परम्परा की उपस्थिति बयां करती है।

वल्लभ सम्प्रदाय में भी गोवर्धन धर श्रीकृष्ण स्वरूप, दान लीला आदि स्वरूपों को विशिष्टता से विग्रह लीलाओं के रूप में सेवा प्रणालिका से सेवित किया जाता है।

यद्यपि बीकानेर के शासक स्वाभाविक रूप से धार्मिक प्रकृति के ही थे। राज्य के संस्थापक राव बीका ने पिता राव जोधा से प्राप्त पूजनीक वस्तुओं में से एक लक्ष्मीनारायण[7] की मूर्ति बीकानेर को एक वैष्णव मन्दिर में स्थापित किया। इस विग्रह के भव्य मन्दिर का निर्माण राव लूणकरण ने करवाया। कालान्तर में इस मन्दिर की व्यवस्थाओं आरोगण, पौशाक आदि के लिए दरबार की ओर से गांव कपूरीसर गांव मैलाणो बड़ो, गांव खोखराणो एवं गांव कुजटी आदि की आय को श्री ठाकुरजी के नाम किया गया।[8]

राज्य में स्थापना के साथ ही सिक्के ढालने के लिए टंकसाल की स्थापना का कोई अभिलेख प्राप्त नहीं होता। यही कारण है कि प्रारम्भिक राजाओं के सिक्के प्राप्त नहीं होते। सर्वप्रथम महाराजा गजसिंह के कार्यकाल के दौरान मुगल शासक अजीज–उ–दीन–मोहम्मद आलमगीर द्वितीय (1754–1759 ई.) में सिक्के ढ़ालने की अनुमति मिली और 1759 ई. के पश्चात् स्थानीय सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ।

बीकानेर के शासकों ने अपने शासन काल में प्रचलित नये सिक्कों के लिए एक विशेष चिह्न का भी प्रयोग किया। इनमें महाराजा गजसिंह ने 'पताका' (भगवान शिव का प्रतीक), महाराजा सूरतसिंह ने 'त्रिशूल' (धार्मिक सर्वोच्चता एवं शौर्य का प्रतीक), महाराजा रतनसिंह ने पगड़ी के आगे लगाये जाने वाला 'किरनिया' (संप्रभुता एवं सर्वोच्चता का प्रतीक, भगवान श्रीकृष्ण का अलंकार), महाराजा सरदारसिंह ने 'छाता' (ईश्वरीय छत्र के रूप में), महाराजा डूँगरसिंह ने 'उड़ती कलंगी' एवं महाराजा गंगासिंह ने 'मोरछल' (मोर की कलंगी) को चिह्न के रूप में चुना।[9] इन चिन्हों का उद्देश्य अपनी सार्वभौमिकता, सर्वोच्चता एवं स्वतंत्रता व शान्ती के प्रतीक के उद्घाटन के साथ ही अपनी धार्मिक भावनाओं को भी प्रकट करना था।

राज परिवार का वल्लभ सम्प्रदाय के प्रति आश्रय :

बीकानेर राज्य का राठौड़ राज परिवार व इस परिवार से सम्बद्ध लोगों में वैष्णव भक्ति में अगाध आस्था थी। राज्य की राठौड़ शासन सत्ता के संस्थापक राव बीका के पौत्र एवं राव नरा के के पुत्र राव लूणकरण (1504–1526 ई.) की पुत्री बाल बाई जी व उनके पति की श्री द्वारकानाथजी (भगवान श्रीकृष्ण का एक स्वरूप) परम भक्त थे।[10] बीकानेर के विशालकाय जूनागढ़ दुर्ग के निर्माता एवं प्रतापी शासक महाराजा रायसिंह की जूनागढ़ के प्रमुख प्रवेश द्वार 'सूरजपोल' पर लगी जूनागढ़ प्रशस्ति का प्रारम्भ 'श्रीकृष्ण' से प्रारम्भ होता है।[11] महाराजा रायसिंह ने वल्लभ सम्प्रदाय की पंचमपीठ के

पीठाधीश्वर गोस्वामी वल्लभ जी से दीक्षा प्राप्त कर 'नांव श्रवण' कर वल्लभ सम्प्रदायी वैष्णव भक्ति को ग्रहण किया।[12] महाराजा ने अपने गुरु से दीक्षा प्राप्त कर सम्मान स्वरूप बीकानेर राज्य का रैवासी गाँव भेंट में प्रदान किया। इस गाँव की वार्षिक आय रु. तीन सौ प्रति वर्ष थी।[13]

महराजा के भाई और गागरोन किले के किलेदार महाराज पृथ्वीराज वीर पराक्रमी होने के धार्मिक एवं अच्छे कवि भी थे। वह वल्लभ सम्प्रदाय के द्वितीय आचार्य गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के समकालीन एवं परम शिष्य थे। वह वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित भगवदीय वैष्णव थे। उनका उल्लेख गोस्वामी जी के परम प्रिय शिष्यों के गोस्वामी गोकुलनाथ जी द्वारा विरचित दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता में वार्ता सं. 241 में उल्लिखित भी किया गया है।[14]

उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण एवं वल्लभ सम्प्रदाय को समर्पित अनेक ग्रन्थों की भी रचना की। जिनमें वेली कृष्ण रुकमणी री, अपने गुरु के प्रति समर्पण एवं प्राथंना में 'श्री विट्ठलनाथ जी रा दूहा १२', भगवान श्रीकृष्ण की स्तुती में 'वसदेवरावउतरा दूहा १८५' की रचनाएँ है।[15]

बीकानेर के रियासती अभिलेखों की बहियों के प्रारम्भ में वैष्णव भक्ति को प्रदर्शित करने वाले उद्‌बोधन प्राप्त होते है। उनमें से सं. 1683 (1626 ई.) की 'ठाकुरों रे पट्टों री बही' के प्रथम पृष्ठ पर *श्री गोरधन नाथ* लिखा है।[16]

महाराजा गजसिंह जी भी वल्लभ सम्प्रदाय के प्रति अत्यन्त समर्पित थे। उन्होंने पंचमपीठ के अधीश्वर से भेंट कर आदर भाव प्रकट किया और उनकी वंश परम्परा की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने श्री गोवर्धननाथ जी एवं श्री द्वारकानाथ जी विग्रहों के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए समय समय पर आयोजित उत्सवों एवं मनोरथों हेतु राज्य की ओर भेंट धराई। उन्होंने तृतीय पीठ के आचार्यों के गद्दी पर विराजमान होने के पाटोत्सवों पर भी सर्वप्रथम अपनी सम्मान भेंट भिजवाई।[17]

महाराजा सूरतसिंह (1787–1828)–

महाराजा सूरतसिंह भी वल्लभ सम्प्रदाय के प्रति समर्पित थे। उन्होंने वृंदावन में अपने निजी उपयोग के लिए एक कुंज (महल) का निर्माण करवाया। परन्तु वृन्दावन से बीकानेर आने पर उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और कुछ समय पश्चात उनकी मृत्यु हो गई। तब उनके पुत्र महाराजा रत्नसिंह ने कुंज को, पिता की इच्छानुसार श्री गोकुल चन्द्रमा के विग्रह को सुपुर्द कर मन्दिर की व्यवस्थाओं को सुचारू चलाने के लिए दीपमोतीसर गांव की रु. सात सौ की आय भी सांसण[18] कर दी।[19]

महाराजा रत्नसिंह (1828–1851)–

बीकानेर महाराजा सूरतसिंह माता सरदार कँवर पँवार के ज्येष्ठ पुत्र रत्नसिंह का जन्म 30 दिसम्बर, 1790 ई. को हुआ। पिता की मृत्यु के पश्चात् 5 अप्रैल, 1828 ई. को सिंहासन पर बैठे। महाराजा रत्नसिंहजी ने कुल चार विवाह किये। जिनमें से प्रथम पत्नी रणजीतसिंह डूंडलोत की पुत्री राजकँवर थी। रत्नसिंह का द्वितीय विवाह मेवाड़ के पुष्टिमार्गी अनुयायी महाराणा भीमसिंह की पुत्री के साथ 3 जुलाई, 1820 ई. में हुआ।[20]

पुष्टि वैष्णव महाराजा रत्नसिंह ने हरिद्वार, गया, काशी आदि शैव मत के तीर्थों की यात्रा कर अपने पुत्र (सम्भवतः सरदार सिंह) के शीघ्र आरोग्य की कामना से सं 1893/1836 ई. के फाल्गुन मास में काशी तीर्थ में आयोज्य पंचकोशी पैदल यात्रा की। इस पंच कोशी परिक्रमा का मार्ग पैतीस कोश[21] लम्बा अर्थात् 109.2 कि.मी. लम्बा मार्ग 104 दिन में पैदल चल कर पूरा किया।[22]

बीकानेर में पुष्टिमार्गी मन्दिर का निर्माण –

बीकानेर महाराजा रत्नसिंह कृष्ण भक्त धार्मिक वैष्णव थे। महाराजा ने श्रीराजरत्न बिहारी मन्दिर का निर्माण कर वल्लभवंशी पंचमगृहाधीश गुरु गोस्वामी गोविन्द लाल जी (गोविन्दप्रभु) को भेंट किया। पुष्टिमार्ग या वल्लभ संप्रदाय का बीकानेर में विधिवत आगमन एवं प्रचार प्रसार महाराजा रत्नसिंह द्वारा निर्मित इस मन्दिर एवं गोस्वामी गोस्वामी गोविन्द लाल जी (गोविन्द प्रभु) के आगमन से माना जा सकता है और इस पुष्टि भक्ति मार्ग प्रणालिका से सेवित मन्दिर[23] महाराजा रत्नसिंह के द्वारा अपनी प्रथम पत्नी के नाम से वि.सं 1907/1850 ई. में श्री राजरतन बिहारी पुष्टिमार्गी मन्दिर के निर्माण में का उल्लेख मन्दिर में लगे शिलालेख से प्राप्त होता है। महाराजा ने इस मन्दिर का निर्माण करवा कर महाराजा रायसिंह के दीक्षा गुरु जयपुर स्थित पंचम पीठाधीश्वर गोस्वामी श्री गोविन्द लाल जी को सौंप दिया। क्रमिक विकास के मध्य,

बीकानेर राज्य में महाप्रभु आचार्य वल्लभ द्वारा प्रचलित शुद्धाद्वैत दर्शन के पुष्टि भक्ति मार्ग का प्रथम प्रत्यक्ष उदाहरण प्राप्त होता है।

महाराजा रत्नसिंह का पुष्टिमार्गी समर्पण–

रत्नसिंहजी की द्वितीय पत्नी उदयपुर महाराणा भीमसिंह की पुत्री अजबकंवरजी[24] थी। विवाह कर उदयपुर से वापिस आते समय महाराजा नाथद्वारा में रुके। वहाँ उन्होंने मन्दिर के अनेक उत्सवों में भाग लिया और श्रीनाथजी एवं गुंसाईजी को भेंट भी धरायी। श्रीनाथद्वारा से रत्नसिंहजी अपने लावाजमे के साथ कांकरोली भी गये। वहाँ भी मनोरथ करवाये और श्री द्वारकाधीश मन्दिर तथा गुंसाईजी को भेंट भी धराई।[25]

महाराजा की पुष्टि भक्ति परम्परा में अटूट श्रद्धा थी। उन्होंने दिसम्बर 1836 से जनवरी 1837 तक कृष्ण जन्मभूमि मथुरा, वृन्दावन व अन्य कई तीर्थों की यात्रा की। मथुरा यात्रा के दौरान महाराजा ने अपने पूर्वजों के निमित्त यमुना जी के विश्रांत घाट पर मुंडन करवा कर श्री लक्ष्मीसिंहजी के साथ संपाड़ा (स्नानादि कर विधि विधान के साथ विशेष पूजा) किया तथा पिंडदान किया। मथुरा के चौबे (पुष्टिमार्गी पण्डा ब्राह्मणों) को भोजन करवा एक एक रुपया दक्षिणा, मर्दाना, जनाना कपड़े आभूषण, हाथी, रथ, घोड़े, पालखी का दान किया।[26]

महाराजा ने पंचम पीठाधीश्वर एवं राज रतन बिहारी मन्दिर के गुंसाई श्री गोविन्द राम जी को रु. 15000/–की जागीर सम्मान स्वरूप प्रदान की गई। इस प्रकार बीकानेर राज्य में वल्लभ या पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय का बीकानेर राज्य में प्रवेश, प्रचार व प्रसार हुआ तथा कालान्तर में गुंसाईजी के प्रभाव, सम्प्रदाय में कृष्ण के विभिन्न स्वरूपों की विशेष रीति पूर्वक व्यवस्थित सेवा प्रणालिका आदि कई कारणों से वल्लभ सम्प्रदाय या पुष्टिमार्ग परम्परा का प्रभाव बढ़ने लगा।[27] महाराजा ने सं 1893/1836 ई. में बरसाना नंदगाँव, वृन्दावन, गोकुल की यात्रा की। यमुना के किनारे गायों की सेवा के साथ पुष्टि भक्ति मंदिरों के दर्शन भी किये तथा सभी जगह भेंट स्वरूप द्रव्य भी प्रदान किया।

इस यात्रा की विशेषता यह रही कि महाराजा ने राज्य में वापस आकर सम्पूर्ण राज्य में कन्या वध प्रतिबन्धित कर दिया। इस आदेश को सख्ती से लागू करने के लिए ऐसे कन्या–हत्या करने वाले जागीरदारों का जागीरी पट्टा जब्त करने एवं मृत्युदण्ड का प्रावधन भी किया गया।[28]

संवत् 1896/1839ई. में महाराजा रतन सिंह की मेवाड़ महाराणा सरदार सिंह जी से श्री नाथद्वारा की पवित्र नगरी में मुलाकात हुई। वहाँ श्री गोवर्धननाथ जी के दर्शन कर दोनों शासक मन्दिर के गोवर्धन चौक में सामान्य श्रद्धालु की तरह बैठ गये। बाद में दोनों शासकों ने कांकरोली में श्री द्वारकानाथ जी के दर्शन कर मनोरथ किया व श्री गुंसाईजी को भेंट प्रदान की।[29]

उपसंहार :

यद्यपि वल्लभ सम्प्रदाय के पुष्टि विग्रहों का राजपूताना में आगमन एक अति विशिष्ट घटना भी मानी जाती है, क्योकि इन विग्रहों के आगमन एवं राजपूताना के यहाँ के विभिन्न राज्यों में सांस्कृतिक एवं धार्मिक विकास की धारा का राज्याश्रय एवं लोकाश्रय में प्रवाह तेजी से हुआ। फलतः इस सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धान्त, सेवा प्रणालीका, स्वच्छता, जल संरक्षण एवं नारी चेतना आदि श्रेष्ठ विचारों का लोकाश्रय में प्रसार हुआ। उत्तर मध्यकाल में महाराजा गजसिंह का नाथद्वारा की शान्ति सभा में भाग लेना, रतनसिंह का कन्या वध पर सख्ती से रोक लगाना इस सम्प्रदाय के सामाजिक सरोकारों एवं शान्ति व जीवन रक्षा आदि सामाजिक मान्यताओं का परिणाम हो सकता है। अतः कोई अतिशयोक्ति नहीं कि मध्यकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक राजपूताना में वल्लभ सम्प्रदाय का प्रसार एक महत्त्वपूर्ण घटना माना जा सकता है।

परिशिष्ट – 01

क्र. सं.	शासक का नाम	गद्दी पर बैठने का वर्ष	मृत्यु का वर्ष	विशेष विवरण
1.	राव बीका	1488	1504	बीकानेर राज्य के संस्थापक, वीर व विद्यानुरागी शासक
2.	राव नरा	1504	1505	अल्पावधि तक शासक रहे
3.	राव लूणकरन	1505	1526	लक्ष्मीनारायण मन्दिर की स्थापना की

4.	राव जैतसी	1526	1542	बाबर के पुत्र कामरान को राती घाटी के युद्ध में पराजित किया
5.	राव कल्याणमल	1542	1571	15 नवम्बर, 1570 को राव कल्याणमल पुत्र राजकुंवर रायसिंह के साथ नागौर में हुए दरबार में उपस्थित हुए।
6.	राजा रायसिंह	1571	1611	मुगल दरबार में चार हजार जात व सवार का मनसबदार था। बीकानेर राज्य को वल्लभ सम्प्रदाय से परिचित करवाने वाले शासक थे।
7.	राजा दलपतसिंह	1611	1613	–
8.	राजा सूरसिंह	1613	1631	महाराजा दलपतसिंह के भाई रामसिंह की पुत्री जैसलमेर के रावल हरराज के पुत्र भीम की विवाहिता थी। रावल भीम की असमय मृत्यु हो जाने पर उसके अबोध बालक को भाटी सरदारों ने मौत के घाट उतार दिया। तब राजा सूरसिंह ने दुःखी होकर बीकानेर के राठौड़ों की पुत्रियों का विवाह जैसलमेर के भाटियों के साथ नहीं करने की कसम खाई।
9.	राजा कर्णसिंह	1631	1669	1.जैसलमेर के महाजळ भाटी द्वारा लूट कर सिरहड़ गाँव ले जाई गई गवरजा का विग्रह पुनः बीकानेर लाये। 2. अटक से ईरान ले जाकर हिन्दू राजाओं के धर्म परिवर्तन करवाने की मंशा को भांप धर्म रक्षा ध्वज उठाया, सभी शासकों को हिम्मत बंधाई हिन्दू धर्म की रक्षा की। इस अवसर सभी हिन्दू राजाओं ने राजा कर्णसिंह को 'जय जंगलधर बादशाह' की सम्मानित पदवी प्रदान की।
10.	महाराजा अनूप सिंह	1669	1698	विद्या प्रेमी महाराजा ने बादशाह औरंगजेब के डर से नदियों में बहा कर नष्ट किये जाने वाले संस्कृत के धार्मिक ग्रन्थों को बचाकर बीकानेर ले आये। उनके शासन काल में अनूप रत्नाकर एवं अनूप–मेघमाला नामक ग्रन्थों की रचना हुई।
11.	महाराजा स्वरूप सिंह	1698	1704	–
12.	महाराजा सुजानसिंह	1700	1735	–
13.	महाराजा जोरावरसिंह	1736	1746	–
14.	महाराजा गजसिंह	1746	1786	–
15.	महाराजा राजसिंह एवं महाराजा प्रतापसिंह	1787	1787	–
16.	महाराजा सूरत सिंह	1787	1828	अंग्रेजों के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर किये।
17.	महाराजा रतनसिंह	1828	1851	सन् 1831 ई. में मुगल शासक अकबर द्वितीय ने महाराजा रतनसिंह को 'नरेन्द्रशिरोमणि' से विभूषित किया। राज्य में राज रतन बिहारी नामक वल्लभ सम्प्रदाय के

				मन्दिर का निर्माण करवाया।
18.	महाराजा सरदार सिंह	1851	1872	इनके शासनकाल में पंचम एवं सप्तम पीठ के विग्रह जयपुर से बीकानेर आये। पार्वती खवास ने रसिक शिरोमणी मन्दिर का निर्माण करवाया।
19.	महाराजा डूँगर सिंह	1872	1887	हरिद्वार में गंगा मन्दिर का निर्माण करवाया।
20	महाराजा गंगासिंह	1887	1943	बीकानेर के विकास पुरुष, बीकानेर के भगीरथ, नरेन्द्र मण्डल के चांसलर, केसर–ए–हिन्द की उपाधि से सम्मानित, विभिन्न सैन्य उपाधियों से विभूषित। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की आधारशिला कार्यक्रम में भाग लिया।
21	महाराजा शार्दूलसिंह	1943	1950	भारत की स्वतंत्रता के समय विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये।

[1] भारतीय धार्मिक वांग्मय में द्वादश दैदिप्यमान नक्षत्रों की गणना की जाती है जिनमें 1. भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र 2. श्री राम चन्द्र 3. आचार्य पतंजली (योग की शिक्षाओं के आविष्कारक), 4. गौतम बुद्ध (भारतीय धार्मिक वांग्मय को बौद्ध धर्म एवं दर्शन का ज्ञान प्रदाता), 5. भगवान महावीन स्वामी (जैन धर्म एवं शिक्षाओं के प्रणेता) 6. आदि शंकराचार्य (अद्वैत दर्शन के प्रणेता), 7. गुरु गोरखनाथ (गोरक्ष पंथ के नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक), 8. गुरु नानक देव (सिक्ख पंथ के प्रवर्तक), 9. कबीर (निर्गुण भक्ति धारा के प्रवर्तक), 10. मीरा बाई (राजपूताना के प्रतिष्ठित मेवाड़ राजघराने की रानी, गुरु रैदास की शिष्या, सगुण भक्ति धारा की सुदृढ़ यथार्थ), 11. रामकृष्ण परमहंस (वसुधैव कुटुम्बकम् के विचार से विश्व को अवगत कराने वाले भारतीय सन्त स्वामी विवेकानन्द के गुरु एवं ध्यान योग साधना के माध्यम से ईश्वरीय साक्षात्कार की प्रबलता को धार्मिक वांग्मय में स्थापित करने वाले मनीषी), 12. जी. कृष्णमूर्ति (दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विषयों के प्रवचक)

[2] पुष्टिमार्ग में श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप, निकुंज नायक एवं ललित त्रिभंगी आदि स्वरूपों की सेवा की जाती है।

[3] राव बीका के साथ जोधपुर से चाचा कांधल, सिपहसालार रूपा, मांडन, मांडलो और नत्थू, भाई जोगायत एवं बीदा, नापा साँखला व घोड़ों की देखभाल में सिद्धहस्त बेला परिहार व कुछ मुत्सदियों बैद लाला लखनसी, कोठारी चौथ मल, बच्छावत बरसिंह पुरोहित विक्रमसी एवं साहूकार सालोजी राठी बीकानेर की ओर आए। अर्सकीन, के.डी. : द राजपूताना स्टेट्स रेजिडेन्सी एण्ड द बीकानेर एजेन्सी, पायोनियर प्रेस, इलाहाबाद, 1909, पृ. 335, पाऊलेट, पी. डब्ल्यू. : गजेटियर ऑफ बीकानेर स्टेट, सुपरिन्टेन्डेन्ट ऑफ गवर्नमेन्ट प्रिन्टिग, कलकत्ता 1874, पृ 24

[4] वेब, विलियम विलफ्रिड, द करेंसी ऑफ द हिन्दु स्टेट्स ऑफ राजपूताना, मनोहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स नई दिल्ली, 1900/2021, पृ. 55

[5] दानलीला का हस्तलिखित में वर्णित है कि *के* इक दिन श्री गोपाल प्रभु यह ठानी मन माह।। प्रातदान चल ली जाये गुपयन सों मन माह।।२।। सीस मुकट कर मैं लकुट कट तट कछनी प्रभु।। कांधे कमरी पीत पट कटगर गुंजनमाल।।७।।.....आ पौहुंचे तव ग्वालन के पांही।।.....छिन पाछे सीसन धर मटकी की दध पाषण जो जानी ट ट की अति मीठी जो प्यारी नटकी आ पौहुची ताहि डगर ग्वाला।। दानलीला ग्रन्थ पृ. 01 से 04, गोपवेशस्य विष्णोः। मेघदूत 1/15, मिश्र सुखानन्द, गणपत कृष्णाजी मुद्रणालय, बम्बई, पृ. 20

[6] व्यास, शिव कुमार, बीकानेर में पुष्टि भक्ति परम्परा का विकास (पूर्व गुप्तकाल 240ई. से महाराजा गजसिंह {1787ई.}), जूनी ख्यात, जनवरी–जून 2021, अंक 2, मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूँगरगढ़, पृ. 253 से 263, बीकानेर स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ (1887–1937 ई.), गंगा राजकीय संग्रहालय, बीकानेर में संग्रहित फलक, अग्रवाल रत्न चन्द्र, शोध पत्रिका अंक–4, जून–1961, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, पृ. 2–4

[7] द हाऊस ऑव बीकानेर बीइंग ए नरेटिव ऑफ द.....बीकानेर स्टेट एण्ड इट्स रूलर्स फ्रॉम एन्सिएन्ट टाइम्स, 1933, Appendix 4, पृ. 221

[8] सिंढ़ायच, दयालदास, ख्यात देशदर्पण, संपा. जे. के. जैन, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, 1989, पृ. 152

[9] वेब, विलियम विलफ्रिड, द करेंसी ऑफ द हिन्दु स्टेट्स ऑफ राजपूताना, तत्रैव, पृ. 57, 58

[10] सिंहढ़ायच, दयाल दास, दयाल दास री ख्यात (द्वितीय खण्ड), सं. दशरथ शर्मा, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर, 1948, पृ. 42

[11] बीकानेर के महाराजा रायसिंह प्रशस्ति के अन्तिम भाग में लिखा है "अथ संवत् 1650 वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्या गुरौ रेवती नक्षत्रे साध्य नाम्नी योगे महाराजाधिराज महाराज श्री श्री श्री २ रायसिंहेन दुर्गप्रतोली संपूर्णा कारिता।"

[12] ब्रह्म सम्बन्ध प्रदान करने के अधिकारी आचार्य वल्लभ के वंशज गोस्वामी वैष्णवों को अष्टाक्षरी मंत्र श्रीकृष्ण शरणम् मम प्रदान करते है। साक्षात्कार, वैष्णव मोहनलाल, पुरोहित, मोकाती पाड़ा, जैसलमेर, निरीक्षण भेंट दिनांक 9/05/2019

[13] सिंहढ़ायच दयाल दास, दयालदास री ख्यात भाग–2, सं. जे. के. जैन, राज. राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, पृ. 151

[14] गोस्वामी गोकुल नाथ, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, सं. रामदास गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, श्री वेकटेश्वर प्रेस, 1931, पृ. 483

[15] मुंहता नैणसी, मुंहता नैणसी री ख्यात भाग–3, सं. श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर प्रथम संस्करण, 1964, पृ. 206

[16] पट्टा बही रिकार्ड, ठाकुरां रे पट्टा री बही, सं. 1683, पृ 1, राज. राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

[17] सिंढ़ायच, दयालदास, दयालदास री ख्यात, सं. जे. के. जैन, तत्रैव, पृ.56, 57, शास्त्री, पो. कंठमणी, कोंकरोली का इतिहास, श्री विद्याा विभाग, कांकरोली, प्रथम संस्करण, 1939, पृ. 214, 220

[18] राज्य द्वारा ब्राह्मणों, चारणों एवं अन्य धार्मिक स्थानों की व्यवस्थाओं के खर्च हेतु प्रदत्त भूमि एवं गांवों की आय

[19] पट्टा बही रिकार्ड, अनलिस्टेड सावा बही, बही परवाना 1800 नं 2–1, पृ. 42, ।।श्रीगोकुलचन्द्रमाजी १ श्रीरामजी।। श्री बलभजी।।श्रीलक्ष्मीनारायणजी ।। कुंज १ श्री बनराबन मैं महाराजाधिराज महाराज शिरौमणि महाराजाजी श्री २०८ श्री सूरतसीहजी रै नावे मं की जी श्री बास देवानंद सरस्वती जी हसतू खरीद हुई तैं मैं श्री (सूरतसीह) जी बिराजसी ईसो बीचार कीयो छो तै ऊ प्र क की जी श्री बीकानेर आया नै श्री(सूरतसीह) हजूर मालम कीवी माहारो सरीर तो हमै खीण पड़ गयो नै आ कुंज श्री दरबार री छै सु हमै इयै कुंज री संभाल आपकी जै पछैक श्री (सूरतसीह) जी रामसरण हुवा ताहार श्री दरबार बीचार की श्री (गोकुलचन्द्रमा जी) जी रै तालकै पुजारी तोलाराम दीनानाथ चुहाण हरीसींघ नै पूछ आ कुंज गांव दीपमोतीसर म श्री जी रै सासण धोती को कुंज तालकै कर श्री जी रै गुंसाई जी श्री नै सोपना की वी छै सु हमै इये कुंज मैं (श्री गोकुलचन्द्रमा जी) री सेवा पधरासी तैरी सेवा अै करसी गांव री पैदा कुंज रै खरच मै आसीक श्री जी री बैन अहला बाई वा म श्री जी रे टेहलवा नै खरच गुसांईजी माहाराज हीया जासी अै जी सी ई तरै अै गुसांई जी माहाराज री बंदगी करसी परसन राखसी दु।। मोहतो राव अभै सीघ तैरी दी वानी सनद स. १८६२ वैसाश वद ४ मु। पाय तखत श्री बीकानेर कोट दाखल, व्यास, शिव कुमार, उत्तर–पश्चिम राजस्थान में पुष्टिमार्गी परम्परा : एक ऐतिहासिक अध्ययन (बीकानेर –जैसलमेर के सन्दर्भ में) शीर्षक अप्रकाशित शोध, पृ. 263

[20] सिंह, राजवी अमर, मेडिवल हिस्ट्री ऑव राजस्थान वोल्यु. एक, 1992, पृ. 486, 499

[21] 1 कोश = 2 मील, 1 मील = 1.56 कि.मी. अतः 1 कोश = 3.12 कि.मी. इस प्रकार 35 कोश = 109.2 कि.मी. व्यास, शिव कुमार, उत्तर–पश्चिम राजस्थान में पुष्टिमार्गी परम्परा : एक ऐतिहासिक अध्ययन (बीकानेर –जैसलमेर के सन्दर्भ में) शीर्षक अप्रकाशित शोध, पृ. 213

[22] सिंढ़ायच दयालदास, ख्यात देश दर्पण, सं जे.के.जैन, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, सन् 1989 पृ. 93, सिंह, राजवी अमर, मेडिवल हिस्ट्री ऑव राजस्थान वोल्यु. एक, वही, पृ. 498

[23] श्री राजरतन बिहारी मंदिर परिसर में स्थित मंदिर स्थापना लेख–वि.सं 1907/1850 ई. के शिलालेख का मूल पाठ एवं भावार्थ ।।श्री गणेशाय नमः।। अभी शितार्थ सिद्धयर्थ पूजितोयः सुरासुरैः सर्व विघ्न छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।। श्री मद्राठोड़ वंश धुमणिरिह महाभाग्यवान् धर्म मूर्त्ति राजाप्रोद्यत् प्रतापे विमल गुणनिधीरभ सिंहा भिधानः श्री मान् भूपालवर्यो भुवि प्रथिति यशा राजातीयमरूत्वात् तेजस्वी भूरिदाना रिपूगण दलनो शास्ति राज्यं चिराय।१। स्वति श्री सुरतेश भूपतनय श्री राज राजेश्वर इष्टापूर्त विधान कर्मा कुशल श्री रत्नसिंह ाभिधः। सारा सार विचारणेक चतुरः श्री कृष्ण भक्तौरतः स श्रीमान स्वकलत्र पुत्र सहितो वर वर्त्ति सर्वोपरि।२। तत् पट्ट राज्ञी निजधर्मनिष्टा श्री राजकुवरेत्व भिधियमाना सौभाग्यवृद्धा निज पुत्र पौत्रेः कृष्ण प्रशादात् सुखे... दास्यात्।३। तया श्री राज रत्न बिहारी चरणारविंदा द्वैत निश्चल भक्ति निष्टांतः करणया परम पतिव्रत धर्मरतया सकल सौभाग्ययुक्तया सेषावत रिणजीत सिंह जी कस्य पुत्र्या श्री राज वर देव्या स्वभर्त्तु कृपा पशादतः शुभ संवत्सरे शुभ लग्ने शुभ मूहर्त्ते पंचांग शुद्धे दिने अस्य प्रासादस्य पादन्यासः कारितस्तदनंतरं प्राशादं कारियित्वातस्य प्रासादस्य संवत् १६०७/१६५० शाके १७७२ प्रवत्तमाने महामंगल प्रदायके मासोत्तमे मासे फाल्गुन मासे शुभे शुक्ले पक्षे तृतीयायां

गुरूवासरे घट्य ८ पलानि ४४ रेवति नक्षत्रे घट्य १० पलानि ४६ ब्रह्म नाम योग घट्य ५३ पलानि १५ गिर कर्णे एवं पंचांग शुद्ध दिने श्रीमन्महाराजाधिराज राज राजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री रत्न सिंह जी केन सपत्नीकेन सपुत्रेण सपरिवारेण गो गोप सखि सहित श्री राज रत्न विहारी मर्तेश्च शास्त्रोक्त विधिना महता हर्षोत्सवेन प्रतिष्टा कारिता स मूर्त्तिक एषः प्राशाद् चिरंतरंतिष्टतु।। कल्याण मस्तु।। श्री रस्तु।। व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, रियासतकालीन बीकानेर के शिलालेख, 2020, पृ. 187

[24] अजबकँवरजी ने वृंदावन में श्री अजब मनोहर राधा किशनजी मन्दिर का निर्माण करवाया जिसे महाराजा रत्नसिंहजी ने गांव रामसर सांसण किया।। श्री मुरली मनोहरजी भीदासर बिराजै। श्री अजब मनोहर राधा किशनजी वंद्रावनवीराजै। श्री मुरली मनोहरजी भीनासर विराजै। स्वति श्री महाराजध राज राजराजेश्वर नरेंद्र शिरोमणी श्री रतनसीहजी माहाराजकुंवार श्री सीरदारसीहजी वचनात् श्री जी साहबो श्री जी रामीदरा रे दयिड़त गां. रामसरकसवो रो नाळपाळ सीव कोकड सुधो सुधो सोसण तां बायतर करदीयो छै सु हसल.....

[25] विवाह री बही (रत्नसिंहजी रो विवाह), बही संख्या–27,संवत्–1877 {सन् 1820 ई. पृ. 9, 32–35 एवं 47} राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, सिंढ़ायच दयालदास, देश दर्पण, वही, पृ. 173...पछै संवत १८७७ आसाढ़ बद ८ रै साहै ऊपर महाराज श्री सूरतसिंघजी रा राज में महाराज श्री रतनसिंघजी महाराणा भीमसिंघजी री बेटी अजबकंवरजी नै परणीजण नै धारिया सु बडै हगाव सूं विवाह हुवो.....

[26] सिंढ़ायच, दयालदास, ख्यात देशदर्पण, वही, पृ. 89, राजवी, अमरसिंह, मैडाइवल हिस्ट्री ऑफ राजस्थान वोल्यु. 1, तत्रैव, पृ. 485

[27] सिंह, राजवी अमर, मेडिवल हिस्ट्री ऑव राजस्थान वोल्यु. एक, तत्रैव, पृ. 503

[28] सिंढ़ायच दयालदास, ख्यात देशदर्पण, संपादक. जे.के. जैन, तत्रैव, पृ. 93, 94

[29] सिंढ़ायच दयालदास, ख्यात देशदर्पण, संपादक. जे.के. जैन, तत्रैव, पृ. 98

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation